दैनिक भास्कर

जींद भास्कर 19-03-2026

सीआरएसयू में अतुल्य भारत कार्यक्रम के तीसरे दिन दिखी देश की सांस्कृतिक विविधता

फागन आया रंग भरया और केसरिया बालम आवो नी... गीतों ने लोगों को किया भावविभोर

भास्कर न्यूज़ | जींद

सीआरएसयू में चल रहे अतुल्य भारत कार्यक्रम के तीसरे दिन बुधवार को देश के विभिन्न राज्यों की समृद्ध सांस्कृतिक झलक देखने को मिली। इस कार्यक्रम का आयोजन उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, प्रयागराज द्वारा किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य भारत की विविध लोककलाओं, परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत को एक मंच पर प्रस्तुत करना है। कार्यक्रम की मुख्य विशेषता विविधता में एकता की भावना रही, जहां हर प्रस्तुति ने भारतीय संस्कृति की गहराई और सौंदर्य को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया।

विश्वविद्यालय के ऑडिटोरियम में आयोजित इस सांस्कृतिक संध्या में मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा के कलाकार दलों ने अपने-अपने पारंपरिक लोकनृत्यों और गीतों से दर्शकों का मन मोह लिया। कार्यक्रम की शुरुआत उत्तर प्रदेश की टीम द्वारा प्रस्तुत कजरी लोकनृत्य से हुई। सावन-भादों की वर्षा ऋतु में गाए जाने वाले इस नृत्य में प्रेम, विरह और प्रकृति का अत्यंत सुंदर चित्रण देखने को मिला। इसके बाद पूर्वी लोकनृत्य की प्रस्तुति दी गई, जिसमें

जींद. राजस्थानी नृत्य करतीं छात्राएं।

मोरा जियरा लागे ला गीत पर कलाकारों ने भावपूर्ण प्रदर्शन किया। तीसरी प्रस्तुति मध्य प्रदेश के कलाकारों द्वारा बधाई लोकनृत्य के रूप में दी गई, जो पारंपरिक उत्सवों और शुभ अवसरों पर किया जाता है। इसके बाद राजस्थान के प्रसिद्ध भवाई नृत्य ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया, जिसमें एक महिला कलाकार ने सिर पर सात मटके रखकर संतुलन के साथ नृत्य प्रस्तुत किया। केसरिया बालम आवो नी गीत पर किया गया यह प्रदर्शन विशेष आकर्षण का केंद्र रहा। हिमाचल प्रदेश के कलाकारों ने सिरमौर नाटी प्रस्तुत की, जो वहां के शादी-ब्याह और मेलों में किया जाने वाला लोकप्रिय नृत्य है। इसके बाद हरियाणा के कलाकारों ने रागिनी प्रस्तुत कर माहौल को जीवंत बना दिया। सामण की रुत हे मां मेरी... और हीर-रांझा की कथा पर आधारित रागनी ने दर्शकों को भावविभोर कर दिया।

हरियाणा के फाग नृत्य में फागन आया रंग भरया गीत पर महिलाओं ने रंगारंग प्रस्तुति दी। इसके बाद राजस्थानी कलाकारों ने सूफी गीत ओ लाल मेरी पत रखियो बला से प्रस्तुत कर समां बांध दिया। विभिन्न वाद्य यंत्रों के साथ यह प्रस्तुति दर्शकों के लिए बेहद आकर्षक रही। कार्यक्रम में कॉलेज की ऑर्केस्ट्रा टीम ने भी हरियाणवी संस्कृति से जुड़ी मधुर धुनों से दर्शकों का मनोरंजन किया। अंत में उत्तर प्रदेश की टीम द्वारा ढेडिया नृत्य प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का समापन सभी कलाकारों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित करने के साथ हुआ। सुबह के सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में प्रीतम सिंह उपस्थित रहे। सायंकालीन कार्यक्रम में आईजीयू यूनिवर्सिटी, मीरपुर (रेवाड़ी) के वाइस चांसलर डॉ. असीम मिगलानी, कोऑर्डिनेटर डॉ. कृष्ण कुमार, सेक्रेटरी राजपाल पांचाल आदि मौजूद रहे। मेजबान सीआरएस यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. रामपाल सैनी ने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों से जहां प्रतिभागियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मंच मिलता है वहीं विद्यार्थी एक दूसरे राज्यों की सांस्कृतिक धरोहर के बारे में आसानी से समझ पाते हैं।

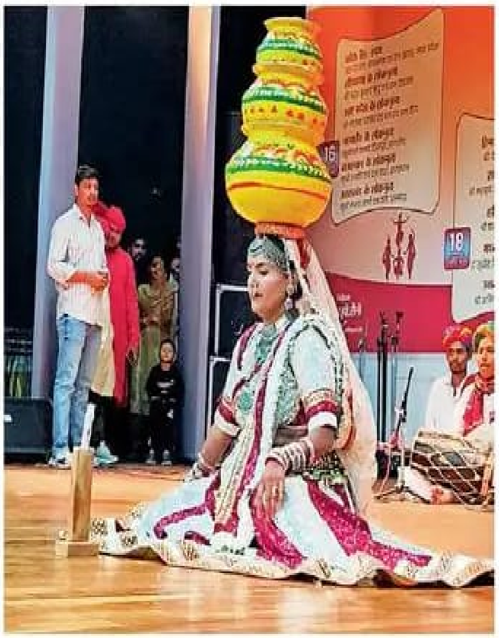

जींद. सिर पर गगरी रख कर नृत्य करतीं प्रतिभागी।

अतुल्य भारत महोत्सव का समापन, विविधता में एकता की दिखी झलक

प्रस्तुति देती हुई छात्रा।

जींद, 18 मार्च (संजीव/संदीप): चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय में अतुल्य भारत कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित 3 दिवसीय सांस्कृतिक महोत्सव का समापन बुधवार को अत्यंत उत्साह और गरिमामय वातावरण में हुआ।

यह कार्यक्रम एन.सी.जैड. सी.सी. प्रयागराज और विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 16 से 18 मार्च तक आयोजित किया गया, जिसमें देशभर से आए 225 लोक कलाकारों ने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का जीवंत प्रदर्शन किया।

समापन समारोह के प्रथम सत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रांत सह कार्यवाहक डॉ. प्रीतम सिंह मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति की प्राचीनता और समृद्धि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत की लोक कलाएं समाज को जोड़ने का कार्य करती हैं। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे अपनी संस्कृति और परंपराओं की गरिमा को बनाए रखते हुए राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं।

सायंकालीन सत्र : जड़ों से जुड़ने का संदेश

समापन समारोह के सायंकालीन सत्र में इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय रेवाड़ी के कुलगुरु प्रो. असीम मिगलानी मुख्यातिथि के रूप में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि एन.सी.जैड.सी.सी. प्रयागराज द्वारा आयोजित यह सांस्कृतिक आयोजन प्रदेश के युवाओं को अपनी जड़ों से जोड़ने का सशक्त माध्यम है। उन्होंने कहा कि इस 3 दिवसीय उत्सव में विभिन्न राज्यों से आए कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से देश की सांस्कृतिक विविधता को जीवंत किया है। उन्होंने कहा कि चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. रामपाल सैनी लोक कलाओं के संरक्षण के लिए एक महती प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने इस सफल आयोजन के लिए एन.सी.जैड.सी.सी. प्रयागराज और विश्वविद्यालय प्रशासन को बधाई दी।

कार्यक्रम को संबोधित करते मुख्यातिथि इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय रेवाड़ी के कुलगुरु प्रो. असीम मिगलानी।

लोक कलाओं की रंगारंग प्रस्तुतियां

कार्यक्रम के तीसरे और अंतिम दिन विभिन्न राज्यों के कलाकारों ने अपनी पारंपरिक लोक कलाओं से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उत्तर प्रदेश की टीम ने कजरी लोक नृत्य प्रस्तुत किया वहीं मध्य प्रदेश के कलाकारों ने बधाई एवं अन्य लोक नृत्य प्रस्तुत किए। राजस्थान की टीम ने कालबेलिया, भवाई एवं चरी नृत्य पेश किया और अपने सूफी गायन से दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। हिमाचल प्रदेश के कलाकारों ने सिरमौरी नाटी की प्रस्तुति दी। हरियाणा की टीम ने फाग और रागनी के माध्यम से स्थानीय संस्कृति की झलक दिखाई।

समापन समारोह में अपनी प्रस्तुति देते विभिन्न राज्यों के कलाकार। (सभी फोटो संदीप)

सांस्कृतिक एकता का प्रतीक

अतुल्य भारत कार्यक्रम ने देश की विविध लोक परंपराओं को एक मंच पर प्रस्तुत कर एक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना को साकार किया। तीन दिनों तक चले इस महोत्सव ने न केवल दर्शकों का मनोरंजन किया, बल्कि युवाओं को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने का महत्वपूर्ण संदेश भी दिया।

अतुल्य भारत कार्यक्रम सांस्कृतिक एकता का प्रतीक: कार्यक्रम के संयोजक डॉ. कृष्ण कुमार ने कहा कि अतुल्य भारत कार्यक्रम ने देश की विविध लोक परंपराओं को एक मंच पर प्रस्तुत कर 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को साकार किया। तीन दिनों तक चले इस महोत्सव ने न केवल दर्शकों का मनोरंजन किया, बल्कि युवाओं को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने का महत्वपूर्ण संदेश भी दिया है।

हिमाचल के नाटी, हरियाणवी फाग व रागनी ने जमाया रंग

सीआरएसयू में 'अतुल्य भारत' महोत्सव का भव्य समापन

संवाद न्यूज एजेंसी

जींद। चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय (सीआरएसयू) में आयोजित तीन दिवसीय 'अतुल्य भारत' सांस्कृतिक महोत्सव का समापन बुधवार को हुआ। इसमें 225 लोक कलाकारों ने मनमोहक प्रस्तुतियों से भारतीय संस्कृति की विविधता और समृद्धि को जीवंत कर दिया।

समापन समारोह के प्रथम सत्र में डॉ. प्रीतम सिंह, निदेशक, डॉ. बीआर. अंबेडकर स्टडीज सेंटर के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने संबोधन में भारतीय सभ्यता की प्राचीनता और सांस्कृतिक धरोहर की महत्ता पर प्रकाश डाला।

कहा कि लोक कलाएं समाज को जोड़ने का कार्य करती हैं। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे अपनी संस्कृति और परंपराओं को संजोते हुए राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं।

द्वितीय सत्र में इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, रेवाड़ी के कुलगुरु प्रो. असीम मिगलानी ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन युवाओं को अपनी जड़ों से जोड़ने का सशक्त माध्यम हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. रामपाल सैनी के प्रयासों की सराहना की

उत्तर प्रदेश की टीम ने कजरी लोक नृत्य प्रस्तुत किया जबकि मध्य प्रदेश के कलाकारों ने बधाई सहित अन्य लोक नृत्यों से समां बांधा। राजस्थान के कलाकारों ने कालबेलिया, भवाई और चरी नृत्य के साथ सूफी गायन प्रस्तुत कर खूब तालियां बटोरीं।

हिमाचल प्रदेश की टीम ने सिरमौरी नाटी और हरियाणा के कलाकारों ने फाग व रागनी के माध्यम से स्थानीय संस्कृति की झलक पेश की।

कार्यक्रम संयोजक डॉ. कृष्ण कुमार ने बताया कि 'अतुल्य भारत' महोत्सव ने देश की विविध लोक परंपराओं को एक मंच पर लाकर सांस्कृतिक एकता का संदेश दिया। यह आयोजन न केवल मनोरंजन का माध्यम बना, बल्कि युवाओं को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने की प्रेरणा भी देता रहा।

सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति देतीं छात्राएं। स्रोत : सीआरएसयू

दैनिक जागरण

Date-19.03.2026

सीआरएसयू में तीन दिवसीय सांस्कृतिक महोत्सव का समापन

सीआरएसयू में अतुल्य भारत कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुति देते हुए कलाकार। ● सौजन्य सीआरएसयू

जागरण संवाददाता ● जींद : चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय में अतुल्य भारत कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित तीन दिवसीय सांस्कृतिक महोत्सव का समापन बुधवार को हुआ। देशभर से आए 225 लोक कलाकारों ने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का जीवंत प्रदर्शन किया। समापन समारोह के प्रथम सत्र में डा. बीआर आंबेडकर स्टडीज सेंटर के निर्देशक डा. प्रीतम सिंह ने कहा कि भारत की लोक कलाएं समाज को जोड़ने का कार्य करती हैं।

उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे अपनी संस्कृति और परंपराओं की गरिमा को बनाए रखते हुए राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं। वहीं इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय रेवाड़ी के कुलगुरु प्रो. असीम मिगलानी ने कहा कि एनसीजेडसीसी प्रयागराज द्वारा आयोजित यह सांस्कृतिक आयोजन प्रदेश के युवाओं को अपनी जड़ों से जोड़ने का सशक्त माध्यम है। उन्होंने कहा कि इस तीन दिवसीय उत्सव में विभिन्न राज्यों से आए कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से देश की सांस्कृतिक विविधता को जीवंत किया है। कार्यक्रम के तीसरे और अंतिम दिन विभिन्न राज्यों के कलाकारों ने अपनी पारंपरिक लोक कलाओं से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उत्तर प्रदेश की टीम ने कजरी लोक नृत्य प्रस्तुत किया वहीं मध्य प्रदेश के कलाकारों ने बधाई व अन्य लोक नृत्य प्रस्तुत किए।

Date-19.03.2026

समारोह सीआरएसयू जींद में 'अतुल्य भारत' का भव्य समापन, लोक संस्कृति का अद्भुत संगम

महोत्सव में कलाकारों ने बिखेरी सांस्कृतिक छटा

दलेर सिंह

जींद (जगमार्ग न्यूज)। चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय (सीआरएसयू) जींद में ÷अतुल्य भारत÷ कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित तीन दिवसीय सांस्कृतिक महोत्सव का बुधवार को उत्साह, उल्लास और गरिमामय वातावरण में भव्य समापन हो गया। 16 से 18 मार्च तक चले इस आयोजन में देशभर से आए 225 लोक कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का जीवंत प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का आयोजन एनसीजेडसीसी प्रयागराज और विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। समापन समारोह के प्रथम सत्र में डॉ. बी. आर. अंबेडकर स्टडीज सेंटर के निदेशक डॉ. प्रीतम सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि भारत की सभ्यता और संस्कृति विश्व में अपनी विशिष्ट पहचान रखती है। लोक कलाएं हमारी परंपराओं की आत्मा हैं, जो समाज को जोड़ने और सांस्कृतिक मूल्यों को सहेजने का कार्य करती हैं। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे अपनी सांस्कृतिक विरासत को संजोते हुए राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं।

सायंकालीन सत्र में इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय, रेवाड़ी के कुलगुरु प्रो. असीम मिगलानी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन युवाओं को अपनी जड़ों से जोड़ने का सशक्त माध्यम हैं और ÷एक भारत, श्रेष्ठ भारत÷ की भावना को मजबूत करते हैं। उन्होंने चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. रामपाल सैनी के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि लोक कलाओं के संरक्षण के लिए इस प्रकार के आयोजन अत्यंत आवश्यक हैं। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. कृष्ण कुमार ने बताया कि ÷अतुल्य भारत÷ महोत्सव ने देश की विविध लोक परंपराओं को एक मंच पर लाकर सांस्कृतिक एकता का संदेश दिया है। यह महोत्सव 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को साकार करते हुए सांस्कृतिक समन्वय का सशक्त उदाहरण बनकर उभरा और उपस्थित दर्शकों के मन में भारतीय संस्कृति के प्रति गर्व और जुड़ाव की भावना को और अधिक प्रगाढ़ कर गया।